

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अयोध्याकाण्डे
॥ सप्तदशाधिकशततमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बुणभरतशक्रघ्ननुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ सप्तदशाधिकशततमः सर्गः ॥

अत्रेराश्रमं गतानां श्रीरामादीनां तेन सत्कारोहनसूयया च
सीतायाः समादरः

राघरञ्जुपयातेषु सर्वेष्वनुरिचिञ्चयन्।
न तत्रारोचयद् रासं कारुणैर्बल्लभिसुदा ॥ 2.117.1 ॥

इह मे भरतो दृष्टो मातरश्च सनागराः।
सा च मे स्मृतिरन्नेति तान् नित्यमनुशोचतः ॥ 2.117.2 ॥

स्फकारारनिरेशेन तेन तस्य महात्नः।
हयहस्तिकरीषैश्च उपमर्दः कृतो भृशम् ॥ 2.117.3 ॥

तस्मादन्यत्र गच्छाम इति सङ्घिञ्च्य राघरः।
प्रातिष्ठत स रैदेह्या लम्बुणेन च सङ्गतः ॥ 2.117.4 ॥

सोहत्रेराश्रममासाद्य तं ररन्दे महायशाः।
तं चापि भगरानत्रिः पुत्ररं प्रत्यपद्यत ॥ 2.117.5 ॥

स्वयमातिथ्यमादिश्य सर्वमस्य सुसत्कृतम्।
सौमित्रिं च महाभागं सीतां च समसाल्ङ्घयत् ॥ 2.117.6 ॥

पत्नीं च तमनुप्राप्तां रूढ्कामामन्त्र्य सत्कृताम्।
साल्ङ्घयामास धर्मञ्जः सर्वभूतहिते रतः ॥ 2.117.7 ॥

অনসূয়াং মহাভাগাং তাপসীং ধর্মচারিণীম্।
প্রতিগৃহ্নীশ্চ রৈদেহীমব্রবীদৃষিসত্তমঃ ॥ 2.117.8 ॥

রামায় চাচক্ষে তাং তাপসীং ধর্মচারিণীম্।
দশ বর্ষণ্যানারূষ্ট্যা দন্ধে লোকে নিরন্তরম্ ॥ 2.117.9 ॥

যযা মূলফলে সৃষ্টে জাহরী চ প্রবর্তিতা।
উগ্ৰেণ তপসা যুক্তা নিযমৈশ্চাপ্যলঙ্কতা ॥ 2.117.10 ॥

দশ বর্ষসহস্রাণি যযা তপ্তং মহৎ তপঃ।
অনসূয়াব্রতৈস্তাত প্রত্যাশ্চ নিবর্হিতাঃ ॥ 2.117.11 ॥

দেবকার্যনিমিত্তং চ যযা সন্দ্বরমাণযা।
দশরাত্রং কৃত্য রাত্রিঃ সেযং মাতের তেহনঘ ॥ 2.117.12 ॥

তামিমাং সর্ভূতানাং নমস্কার্যাং তপস্বিনীম্।
অভিগচ্ছতু রৈদেহী বৃদ্ধামক্রোধনাং সদা ॥ 2.117.13 ॥

এরং ব্রূরণং তমৃষিং তথৈতুকত্বা স রাঘরঃ।
সীতামালোক্য ধর্মজ্ঞামিদং রচনমব্রবীৎ ॥ 2.117.14 ॥

রাজপুত্রি শ্রুতং ংরেতন্বূনেরস্য সমীরিতম্।
শ্রেয়োহর্থমাত্মনঃ শীঘ্রমভিগচ্ছ তপস্বিনীম্ ॥ 2.117.15 ॥

অনসূযেতি যা লোকে কর্মভিঃ খ্যাতিমাগতা।
তাং শীঘ্রমভিগচ্ছ ংরমভিগম্যাং তপস্বিনীম্ ॥ 2.117.16 ॥

সীতা ংরেতদ্ রচঃ শ্রুৎরা রাঘরস্য যশস্বিনী।
তামত্রিপত্নীং ধর্মজ্ঞামভিচক্রাম মৈথিলী ॥ 2.117.17 ॥

শিথিলাং বলিতাং বৃদ্ধাং জরাপাপুরমূর্ধজাম্।
সততং রেপমানাসীং প্রব্রাতে কদলীমির ॥ 2.117.18 ॥

তাং তু সীতা মহাভাগামনসূয়াং পতিব্রতাম্।
অভ্যরাদযদর্যাগ্রা স্বং নাম সমুদাহরৎ ॥ 2.117.19 ॥

অভিরাদ্য চ রৈদেহী তাপসীং তাং দমান্বিতাম্।
বদ্ধাঞ্জলিপুটা হৃষ্টা পর্যপৃচ্ছদনামযম্ ॥ 2.117.20 ॥

ততঃ সীতাং মহাভাগাং দৃষ্ট্বা তাং ধর্মচারিণীম্।
সান্ধ্বযন্ত্যব্রীদ্ বৃদ্ধা দিষ্ট্যা ধর্মমরেক্ষসে ॥ 2.117.21 ॥

ত্যক্দ্ভা জ্ঞাতিজনং সীতে মানবৃদ্ধিং চ মানিনি।
অররুদ্ধং রনে রামং দিষ্ট্যা ংরমনুগচ্ছসি ॥ 2.117.22 ॥

নগরস্থো রনস্থো রা শুভো রা যদি রাশুভঃ।
যাসাং স্ত্রীণাং প্রিয়ো ভর্তা তাসাং লোকা মহোদযাঃ ॥ 2.117.23 ॥

দুঃশীলঃ কামবৃত্তো রা ধনৈরী পরিরজিতঃ।
স্ত্রীণামার্যস্বভারানাং পরমং দৈরতং পতিঃ ॥ 2.117.24 ॥

নাতো রিশিষ্টং পশ্যামি বাক্করং রিমূশন্ত্যহম্।
সর্বত্র যোগ্যং রৈদেহি তপঃকৃতমিরার্যযম্ ॥ 2.117.25 ॥

ন ংররমনুগচ্ছন্তি গুণদোষমসস্ত্রিয়ঃ।
কামরক্তর্যহদযা ভর্তৃনাথাশ্চরন্তি যাঃ ॥ 2.117.26 ॥

প্রাপ্পুরন্ত্যযশশৈচর ধর্মভ্রংশং চ মৈথিলি।
অকার্যরশমাপন্নাঃ স্ত্রিয়ো যাঃ খলু তদ্বিধাঃ ॥ 2.117.27 ॥

ংরদ্বিধাস্তু গুণৈর্যুক্তা দৃষ্টলোকপরাররাঃ।
স্ত্রিয়ঃ স্বর্গে চরিস্যন্তি যথা পুণ্যকৃতস্তথা ॥ 2.117.28 ॥

তদেরমেতং ংরমনুব্রতা সতী
পতিপ্রধানা সমযানুরতিনী।

ভর স্বভর্তুঃ সহধর্মচারিণী

যশশ্চ ধর্মং চ ততঃ সমান্স্যসি ॥ 2.117.29 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে
অযোধ্যাকাণ্ডে সপ্তদশাধিকশততমঃ সর্গঃ ॥